

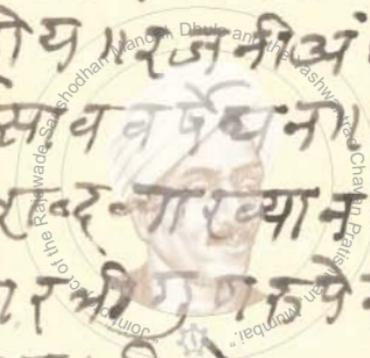


(1)

हे विद्वाधनं निष्ठी ॥ आवधानया वेशो तेजि नि ॥ ऐस्य
 भावदृढ़ धनं नि ॥ अधिक उनि परिस्ति जे ॥ १५ ॥ ये थे चातुर्य
 गांभीर्या अनुभव वे सत्रवनी य ॥ शुध सत्वे पाहि जे धैर्य ॥
 हे विकार्य सिधका ॥ ३० ॥ प्रथम कम्भिं गगडुन ॥ हे तव हेण
 चैलक्षण ॥ देहस प्रभ्रमा पुण ॥ लहजे साधन पैजा चे ॥ २७ ॥
 लेकी कम्भिं पाटी ता ॥ त्याचेच्छापी मकड सता ॥ ते थे कम्भि
 त्याग करी ता ॥ झोय सर्वधिअविकेक ॥ २८ ॥ कम्भिं रस्वाधिक्षान
 जे थुभीचटजि ते सक कजन ॥ जगदीर्घ अभी धान ॥ अत्रा अपण प्रवर्ण ॥ २९

(2)

कर्म सत्तोकृतामुक्तिविद्यमान ॥ मुख्यजा गृहिणे स्फुरण ॥ यागवे कोंड
 ग्रामस्त्रियस्त्रिय ॥ कर्मज्ञानभोगवी ॥ २४ ॥ कनका वेगठी कर्मिनहै ॥
 भाननमर्गेचि दिघिहोय ॥ २५ ॥ कर्मियां धकारत्ता है ॥ कर्मपाहुया
 री ती ॥ २६ ॥ मेघापास्त्रववदेवना ॥ धनेविद्युत्तलाहशनि ॥
 कायुक्षेसंभाषण ॥ २७ ॥ गरुद-गरुद्यानगजीती ॥ २८ ॥ शुद्धासरी
 स्तानक्जाठा ॥ २९ ॥ कारभी गणन्ते नट्टा ॥ भिकी धविलार
 पानठा ॥ दृष्टिलामुक्तवीजे ॥ ३० ॥ दृष्टीपञ्चपुष्पिफूल ॥
 शारीरकमचित्तनुकूल ॥ अनुकूलवेष्टे मतिकूल ॥ कर्मसिंजक ३



(2A)

जाणीजो ॥२८॥ कर्महैयस्विनप्राप्ति । नमत्यिगेकवणगति ॥
 जैदेहेंद्रियविषयस्तटति ॥ तैबल्यजिजोनिकपाति ॥ २९॥ असा
 जरी सिध्जाटा ॥ कर्मभ्रमत्वपावता ॥ वेदसाधातनिमिला ॥
 प्रचीलबोतामानीडे ॥ ३०॥ समीपतामुक्तिवैकुंठे ॥ ठींगदेह
 ल्यणतिकंठे ॥ जो अववारीबड़ीछाकमध्रेष्टोकरी ॥ ३१॥
 अनवर्त्तुअस्त्रालेनिबटीले ॥ मगदेवपृष्ठांगाआले ॥ ३२॥
 वर्छलस्त्रियवीहे ॥ कर्मकेलेसुणनी ॥ ३३॥ बोलवावाटेल
 विज्ञार ॥ रामचंद्रादिअवतार ॥ सवेषुउनीवानर ॥ ठंकदार

(3)

कर्म राधिले ॥३३॥ समुद्रिबांधितडा विवेक दोहु ॥ रामनामे पाषाण काहे
 मुळ ॥ भवाण विसाधुसंत ॥ तरत्ते समर्थ यिदन्याचे ॥३४॥
 रावण ईर्द्धजितमारीहु ॥ कंशकणचिवध केहु ॥ राक्षस
 कुक्कला इताजाहु ॥ करस्थापितडा वीभीषणु ॥३५॥ सीता
 सोउविट्ठिजानकी ॥ श्रवा पुजाहु लिहीहोकी ॥ मारवि-
 अंगदस्तग्रिवादिकी ॥ कर्मनाभद्राधत्ते ॥३६॥ त्रेये निजकर्म
 उधार ॥ श्रगटसाहुतासारंगधर ॥ बंधनमुक्त केले पीवर ॥ कर्म-
 चाथोरपैत्याचे ॥३७॥ लीहाचरी भरवेहु ॥ सर्पकाकीयानाथीलां

(3A)

आणी गोन धनित अचली ठा ॥ वृजा जाता अस्तु ॥ ३८१ कं स
 काषुर पुर्व ने री ॥ मालु लु अमला संहारी ॥ द्वारका वसी ती
 स्तंभाव नी ॥ समुद्रा माझा ही अस्तु रमेणे ॥ ३८२ ध प्रयिरी से व क
 जाठा ॥ सवदा भक्ति ने नांध ठार देव मै सांभु के ठा ॥ ट्याधीक
 का तो चिजा णे ॥ ४० ॥ पटकु नाते रही ठे ॥ कौदव कुठा ये हन
 के ठे ॥ गीता धाक्य उपै री ठे ॥ भारथ जाला न समई ॥ ४१ ॥
 अर्जुन न माये ने वेष्टि ठा ॥ तेहाक मधिर बोलि ठास्त्री पुरत्वा
 व ठा ॥ श्लाघ्य जाला न रहै ॥ ४२ ॥ भागवता माजी एका दरु ॥

(1)

कर्म उधवासी के काउपदेश ॥ चुकुनी याचारा पपाश्व ॥ शानसारांशु कोंड
 श्रीला ॥ ४३ ॥ धमस्थिए विलाटा ज्यासी ॥ धर्मजी शारनाश्रु विल्लु
 नी ॥ ऐसी कमची काहणी ॥ सजन जनी ग्रही जे ॥ ४४ ॥ नैभि खहु
 पाहि जे ॥ कण्ठि रेश्वरण की जे ॥ आणे मुवास्तवेइ जे ॥ मुरने बोढी जे
 सत्त्वं वर्व ॥ ४५ ॥ गुद्देसु अविसर्गीयी ॥ गुद्दी मळ पतना चेकायी
 यानावपटक मेघीयी ॥ त्रेष्व अचाध बोल्ली ॥ ४६ ॥ जो बरी देह पाशेका
 धिठ ॥ ॥ लोबरी कमन्त्व के वही ला ॥ देहत्यागे विटाकला ॥ अभक्त
 ठे के ॥ ४७ ॥ देहाहो विकर्म करवीली ॥ मेत्याकर्म भावना नुरवि ॥



(4A)

दशाजाही यास्वी कारीती ॥ होयुपरलीक सते ॥ ४८ ॥ अहनी
 उरठा असेकमि ॥ यालेत्यागुनीवी शोषसहीमा ॥ — ॥ काय
 असाहो इजि ॥ ४९ ॥ ऐसेकमिकांडमाहन ॥ जेवेदाचेमधमस्थान ॥
 मधमभासेसमसाना ॥ यातेकोणनमानीती ॥ ५० ॥ मध्यस्थान
 कायममाण ॥ अरोकामानीतीअधमजन ॥ जेसंदमनीअछमी
 जन ॥ तेकमिपणत्यागीली ॥ ५१ ॥ हेरिवत्यावाचुनीदृष्टीनपउ ॥
 हुकीत्यावाचुनीसाक्षनयउ ॥ प्रणवाम्बिरहीतसंध्यानलउ ॥
 कमधिडफुडयापरी ॥ ५२ ॥ वाणीविनामाद्वनफुटे ॥ गुस्तिवेगके

(5)

कमि विचारनवटे ॥ गुद्दा नेअधानटे ॥ कूमरि टेहावी जे ॥ ४ ॥ मासे काड
 मराठी बोलु ॥ शणि लु हिमानाटको लु ॥ जैसे धमिंग रुन्ही चेडो लु ॥
 प्राची न चाटक प्राची ॥ आ अ रुकाअ नीक मकै से ॥ किंचित
 सेवित्या मृत्युज्ञने नीवसे ॥ विषष्ट येदहनारे ॥ मृत्युज्ञना यासे
 ठेकी ठा ॥ अथा स्ट्रिक मरिंभजाटी ॥ कर्मेयो गसी लीधताजाटी ॥
 प्रजापा केनि मणि केलि ॥ कूमरि छीब कवंत ॥ ५ ॥ प्रश्नप्रतिका
 ग्रेक मजिडटे ॥ कारण देहाते क्षीकारी ठे ॥ स्त्रियो लानु किंची व
 री ठे ॥ कूमरि लोता मस ॥ ६ ॥ अन्तिम गुण क्रोत्रिप्रसादुरा

Digitized by the
Bhawada Sanjodan Mandal, Dhule and the
Yashwantrao Chavhan Peeth
Digitized by the



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com